## SEMESTER – II

## CC – 8

# प्राचीन भारत में कृषि

- **इकाई की रूप-रेखा :**


**8.0** उद्देश्य

**8.1** प्रस्तावना

**8.2** सैंधवकालीन कृषि और किसान

**8.3** वैदिककालीन कृषि और किसान

**8.4** मौर्यकालीन कृषि और किसान

**8.5** गुप्तकालीन कृषि और किसान

**8.6** सारांश



**Vetted by :**

**प्रो॰ ( डॉ॰ ) सुरेंद्र कुमार**

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9835463960

**डॉ॰ राजेश कुमार**

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 9430934482

## 8.0 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- हड़प्पा काल में कृषि कार्य, कृषि कार्य करने के प्रमाण तथा किसानों के बारे में जान सकेंगे ।
- ऋग्वैदिक काल में कृषि कार्य की स्थिति तथा उत्तर वैदिक काल में इसमें आए परिवर्तनों के बारे में जान सकेंगे ।
- मौर्यकाल में कृषि के बारे में जान पाएंगे ।
- गुप्तकाल में किसानों की स्थिति तथा कृषि कार्य के बारे में उल्लेख कर सकेंगे ।

## 8.1 प्रस्तावना :

भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है । भारतीय सभ्यता के विकास का आधार कृषि ही रहा है । किसानों के अथक प्रयास के ही परिणामस्वरूप खेतों में अधिशेष उत्पादन हुआ । इन अधिशेष उत्पादनों का ही प्रभाव रहा, कि समाज के अन्य वर्गों को जीवन-यापन के लिए अनाज मिला और परिणामस्वरूप व्यापार-वाणिज्य का विकास संभव हो पाया । इस इकाई में सैंधवकालीन कृषि और किसान की चर्चा की गई है। अगले चरण में वैदिक, मौर्यकालीन, गुप्तकालीन कृषि एवं किसान के बारे में चर्चा की जाएगी ।

## 8.2 भारतीय कृषि एवं किसान (2350-1750 BC) :

Agriculture has been main occupation of our people since early times अर्थात् शुरूआती दौर से हमारे लोगों का प्रमुख पेशा कृषि रहा है । भारतीय कृषि एवं भारतीय किसान के कारण ही भारतीय संस्कृति की परंपरा भी समृद्ध रही है । प्रकृति

के द्वारा प्रदत्त अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों को भारतीय किसानों ने अपनी मेहनत और लगन से भूमि को कृषि योग्य बनाया, जिसका प्रभाव न केवल अर्थव्यवस्था पर पड़ा, बल्कि इसका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक व्यवस्था में भी देखने को मिला ।

सिंधु नदी घाटी की सभ्यता जो भारत की प्राचीनतम सभ्यता मानी जाती है, से कृषि कार्य करने का प्रमाण मिलता है । इस सभ्यता के लोगों के आर्थिक जीवन का प्रमुख आधार कृषि ही था । पुरातत्ववेत्ताओं ने खुदाईयों के दौरान कई ऐसे प्रयासों को खोज निकाला है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यहाँ के लोग कृषि का कार्य किया करते थे तथा यहाँ कई फसलों का उत्पादन भी किया करते थे । सिंधु का भाग मकरान, बलूचिस्तान जो आज उजाड़ है, कभी उपजाऊ था और नवपाषाण में वहाँ कृषि का श्रीगणेश हुआ था । पूर्व हड़प्पा काल की निरंतरता हड़प्पा काल में भी जारी रही । कृषि कार्य से लोग जुड़े रहे । हालांकि इसके साथ-साथ आंतरिक एवं वैदेशिक व्यापार भी इस समय के लोग किया करते थे ।

हड़प्पा काल में कई तरह के फसलों का उत्पादन किया जाता था, जिसमें अभी तक प्रमुख रूप से 9 फसलों की पहचान की गई हैं । इन 9 फसलों के सबसे प्रमुख फसल गेहूँ एवं जौ था । गेहूँ एवं जौ की दो प्रजातियों की खेती का प्रमाण मिलता है । गेहूँ की दो प्रजातियाँ थी (1) ट्रिटीकम कम्पेक्टम एवं (2) स्फरोकोकम; जबकि जौ की दो प्रजातियाँ थी (1) होरडियम बल्गैर एवं (2) हैक्सास्टिकम् । यहाँ गेहूँ, जौ के अलावा चावल का भी उत्पादन होता था । लोथल से एवं रंगपुर से चावल के प्रमाण मिले हैं । रंगपुर से धान की भूसी मिली है । इसके अलावा बनवाली से अच्छे किस्म के तिलहन का मिलना, लोथल से बाजरे इस बात को प्रमाणित करते हैं, कि बाजरा एवं तिलहन जैसे फसलों की जानकारी इन्हें थी । मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा के भग्नावशेषों में खजूर की गुठलियों के मिलने से इस बात की जानकारी होती है, कि यहाँ के लोग फलों का भी उपयोग करते थे ।

हड़प्पावासी को ही सर्वप्रथम कपास उगाने का श्रेय दिया जाता है । मोहनजोदड़ो से एक चाँदी के बर्तन में कपड़े के अवशेष मिले हैं । कालीबंगा से एक बर्तन का टुकड़ा मिला है, जिस पर सूती कपड़े के निशान है । यही से एक उस्तरे पर भी कपड़ा का वस्त्र लिपटा हुआ मिला । लोथल और रंगपुर का आस-पास का क्षेत्र कपास उपजाने के लिए बहुत ही उपयुक्त था । यूनानी लोग कपास को सिंडोन (Sndon) के नाम से संबोधित किया करते थे । मोहनजोदड़ो से सूत को लपेटने के लिए किए जाने वाले तकनीकी/औजार का भी प्रमाण मिला है ।

हड़प्पावासी किसान कृषि कार्य के प्रति पूरी तरह लगनशील रहे होंगे । यही कारण है, कि उन्होंने अधिशेष उत्पादन कर उन वर्गों की सहायता कि जो सीधे कृषि कार्य से जुड़े हुए नहीं थे । किसानों के ही मेहनत का प्रतिफल था, कि यहाँ एक व्यापारी वर्ग का उदय संभव हो पाया और हड़प्पावासी भारत में प्रथम नगरीय सभ्यता स्थापित करने में सफल हुए । संभवतः यहाँ के निवासी चार वर्गों में बँटे हुए थे पुजारी, वैश्य, कृषक और कुली । कृषक अधिशेष उत्पादन के लिए केवल मानसून पर ही निर्भर नहीं रहते थे, बल्कि वे नहरों के निर्माण एवं जल को संचित करने की विधि से भी परिचित थे । सिंचाई के लिए जो नहरों एवं बांध का निर्माण किया गया था । शायद वह अब बाढ़ के द्वारा लाई मिट्टी के नीचे दब गई है । कृषि कार्य के लिए किसान शायद ताँबे की पतली कुल्हाड़ियों को लकड़ी के हत्थे पर बाँधकर भूमि खोदते रहे होंगे । इसके अलावा चर्ट के फलकों को लकड़ी के हत्थे पर चिपकाकर हँसिये की तरह प्रयोग किया जाता होगा । हालाँकि डी॰ डी॰ कौशांबी का मानना है, कि सैंधव सभ्यता के लोग हल के प्रयोग से अनभिज्ञ थे । परंतु हरियाणा स्थित सैंधव शहर वनवाली से पकाई गई मिट्टी से निर्मित हल के खिलौना के मिलने से ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ के किसान हल का प्रयोग करते थे । इसी तरह राजस्थान में स्थित कालीबंगा से जुते हुए खेत का प्रमाण मिलात है । इससे भी हल के प्रयोग की जानकारी मिलती है । ये हल बैलों द्वारा खींचे जाते थे, जो हड़प्पाई लोगों की भारवाही पशु संपदा का एक प्रमुख अंग थे ।

इस समय के किसानों को खेतों में बीज बोते समय भौगोलिक परिस्थितियों का भी ध्यान रखना पड़ता था । चूँकि इस सभ्यता के अधिकांश क्षेत्रों/नगरों को नदियों के किनारे बसाया गया था, इसलिए बाढ़ आने की जानकारी भी इन्हें रखनी पड़ती थी । यही कारण था, कि बाढ़ के समाप्ति के पश्चात् ये फसल बोते थे तथा बाढ़ आने के पहले ये फसल को काट लेते थे । ऐसा कहा जाता है कि पंजाब और सिंध की नदियों में अक्सर आने वाली बाढ़ों से खेतों की सिंचाई की जाती थी ।

किसानों से करों की वसूली अनाज के रूप में ही की जाती थी । यहाँ मुद्रा के प्रचलन के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है । प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए एवं अनाजों के संरक्षण के लिए राजकीय स्तर पर विशाल अन्नागारों का निर्माण मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल इत्यादि स्थानों पर किया गया था । मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत 45.71 मी लंबा और 15.23 मी चौड़ा एक अन्नागार है । महा अन्नागार हड़प्पाई संस्कृति के विख्यात निर्माणों में से है । उसमें एक-दूसरे से लगे कई चबूतरे थे, जिन पर छह (6) अन्नागारों की दो पंक्तियाँ स्थित थी । कालीबंगा में भी ईंटों के चबूतरे पाये गये हैं । संभव है, इनका इस्तेमाल भी अन्नागारों के लिए किया जाता रहा हो। इन अन्नागारों से अन्न का आगमन और निर्गमन शासन द्वारा नियंत्रित रहा होगा ।

हड़प्पाकालीन आज की ही तरह पशुओं को भी पालते थे । हालाँकि पशुचारकों का एक अलग समूह भी रहा होगा, फिर भी पशुचारक किसानों के साथ सहजीवी संबद्ध रखते थे ।[15] ये पशुचारक वस्तुओं व सूचनाओं के प्रवाहक के रूप में विभिन्न बस्तियों के बीच संपर्क रखते थे और इस प्रकार भौतिक संस्कृति की एकरूपता में अपना योगदान देते थे । हकरा घाटी एवं उत्तरी गुजरात में कुछ संभावित पशुचारण शिविरों की खोज से पता चलता है, कि पशुचारण एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में मौजूद रहा होगा । पालतू पशुओं में कूबड़दार और कूबड़रहित मवेशी, सुअर और भैंसे शामिल थी । हाथी और घोड़े के भी अस्तित्व का पता चला है ।[17] (सुरकोतदा में भी घोड़े की अस्थियाँ मिली है ।)

सैंधवकालीन कृषि एवं किसान का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है, कृषक न केवल अपने और अपने परिवार के लिए बल्कि समाज के अन्य लोगों के लिए खेतों में पूरी मेहनत से काम किया करते थे । इसी का परिणाम था, कि इस सभ्यता में अधिशेष उत्पादन होता था, जो वैसे वर्गों के लिए होता था, जो कृषि कार्य से सीधे जुड़े हुए नहीं थे । इसी अधिशेष उत्पादन का परिणाम था, कि एक व्यापारी वर्ग का उदय हुआ, जिसके कारण सिंधु घाटी सभ्यता एक नगरीय सभ्यता बन पाई । जिस तरह उस समय प्रतिकूल परिस्थितियों के लिए अनाजों का भंडारण किया जाता था, उसी तरह आज भी पूरे देश में एफ॰ सी॰ आई॰ (FCI) के माध्यम से अनाजों का भंडारण किया जाता है ।

## Suggested Readings :


1. किरण कुमार थप्पयाल एवं संकटा प्रसाद शुक्ल – सिंधु सभ्यता (प्रकाशक : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)
2. डॉ॰ शिवस्वरूप सहाय – प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास (हिन्दू सामाजिक संस्थाओं सहित) (प्रकाशक : मोतीलाल बनारसीदास)
3. दामोदर धर्मानंद कौशांबी – प्राचीन भारत : एक ऐतिहासिक रूप-रेखा (राजकमल प्रकाशन)
4. डी॰ एन॰ झा – प्राचीन भारत एक रूप-रेखा (मनोहर पब्लिशर्स)
5. आर॰ एस॰ शर्मा – प्राचीन भारत